सब नामों से ऊपर के नाम, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में आपको नमस्कार। एक बार फिर आपका स्वागत है, जब हम जीवन के वचनों में मनन करते हैं।

जिस समय हमारे प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जा रहा था और सूर्य अस्त होने को था, तब कुछ क्रूसित लोग अभी जीवित थे। तब यहूदी लोग पीलातुस के पास गए और उससे विनती की कि उनके पैर तोड़ दिए जाएँ, ताकि उनकी मृत्यु शीघ्र हो जाए। यह स्मरण रखना आवश्यक है कि यहूदी व्यवस्था के अनुसार किसी अपराधी के शव को सब्त की संध्या तक क्रूस पर लटकाए रखना अशुद्ध माना जाता था।

इस बात को व्यवस्था (तोरा) में स्पष्ट किया गया है। व्यवस्थाविवरण 21:22–23 (हिंदी पवित्र बाइबल) में लिखा है:

“यदि किसी मनुष्य ने ऐसा पाप किया हो जो मृत्यु के योग्य हो,
और वह मार डाला जाए, और तू उसे वृक्ष पर लटकाए,
तो उसका शव रात भर उस वृक्ष पर न रहने पाए; उसी दिन उसे अवश्य गाड़ देना, क्योंकि जो वृक्ष पर लटकाया गया हो वह परमेश्वर
का शापित ठहरता है।”

यहूदी अगुए यह नहीं चाहते थे कि शव रात भर क्रूस पर रहें,

विशेषकर इसलिए कि सब्त एक पवित्र दिन था। इसी कारण उन्होंने पीलातुस से अनुरोध किया कि क्रूसितों के पैर तोड़ दिए जाएँ, जिससे उनकी मृत्यु शीघ्र हो जाए।

धार्मिक (थियोलॉजिकल) अंतर्दृष्टि:
प्राचीन समय में क्रूस पर चढ़ाया जाना मृत्यु का एक बहुत ही धीमा और पीड़ादायक तरीका था। दोषी व्यक्ति घंटों या कई दिनों तक जीवित रह सकता था और धीरे-धीरे दम घुटने या रक्तस्राव से मरता था। पैरों को तोड़ देने से वह सांस लेने के लिए अपने शरीर को ऊपर नहीं उठा सकता था, जिससे मृत्यु जल्दी हो जाती थी।

यदि यहूदी व्यवस्था का दबाव न होता, तो रोमी प्रथा के अनुसार व्यक्ति को तब तक क्रूस पर छोड़ दिया जाता था जब तक वह स्वयं मर न जाए। इसमें कई दिन लग सकते थे और यह जानबूझकर अत्यंत यातनापूर्ण होता था। शवों को तब तक नहीं उतारा जाता था जब तक गिद्ध या अन्य जानवर आकर उन्हें न नोच लें।

यूहन्ना 19:31–36 (हिंदी पवित्र बाइबल):

31 क्योंकि वह तैयारी का दिन था, और सब्त के दिन वे शव
क्रूसों पर न रहने पाएँ (क्योंकि वह सब्त बड़ा दिन था), यहूदियों ने पीलातुस से कहा कि उनके पैर तोड़े जाएँ और शव

उतार लिए जाएँ।
32 तब सिपाही आए और पहले के पैर तोड़े, और दूसरे के भी, जो यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था।
33 पर जब वे यीशु के पास आए और देखा कि वह मर चुका है, तो उसके पैर नहीं तोड़े।
34 परन्तु सिपाहियों में से एक ने भाले से उसकी पसली छेदी, और तुरन्त लोहू और पानी निकल आया।
35 जिसने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है; और वह जानता है कि वह सच कहता है, ताकि तुम भी विश्वास
करो।
36 क्योंकि ये बातें इसलिये हुईं कि पवित्र शास्त्र का यह
वचन पूरा हो: “उसकी एक भी हड्डी तोड़ी न जाएगी।”

धार्मिक अंतर्दृष्टि:

नए नियम में यीशु का शरीर फसह के मेम्ने की प्राचीन छाया को पूरा करता है। यीशु की एक भी हड्डी का न टूटना सीधे उस आज्ञा से जुड़ा है जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को फसह के मेम्ने के विषय में दी थी।

तो फिर उसकी हड्डियाँ क्यों नहीं तोड़ी गईं? और इसका पवित्र शास्त्र में क्या महत्व है?

इसके दो मुख्य धार्मिक कारण हैं:

1. यह प्रमाणित करने के लिए कि मसीह वास्तव में हमारा फसह का मेम्ना है।

जब इस्राएली मिस्र से निकलने की तैयारी कर रहे थे, तब परमेश्वर ने फसह के मेम्ने के विषय में विशेष निर्देश दिए। मेम्ना निर्दोष होना चाहिए था, और उसकी एक भी हड्डी नहीं तोड़ी जानी थी। यह एक भविष्यद्वाणीपूर्ण चित्र था, जो यीशु मसीह के सिद्ध और निष्पाप बलिदान की ओर संकेत करता था।

निर्गमन 12:45–46 (हिंदी पवित्र बाइबल):

“परदेशी और मजदूर उसे न खाएँ।
उसी घर में उसे खाया जाए; उसके मांस में से कुछ बाहर न ले
जाओ, और उसकी एक भी हड्डी न तोड़ो।”

यह आज्ञा भविष्यसूचक थी, जो यह दर्शाती थी कि मसीहा—परमेश्वर का सच्चा मेम्ना—निष्कलंक होगा और उसका शरीर अक्षुण्ण रहेगा, जिससे फसह की व्यवस्था पूरी हो।

यूहन्ना 1:29 (हिंदी पवित्र बाइबल):

“देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।”

इस प्रकार यीशु की न टूटी हुई हड्डियाँ फसह के मेम्ने की भविष्यवाणी को पूरा करती हैं और यह दृढ़ता से स्थापित करती हैं कि यीशु ही सच्चा फसह का मेम्ना है, जो संसार के पापों को उठा ले जाता है।

2. यह दिखाने के लिए कि मसीह का शरीर टूटा नहीं है।

क्रूस की असहनीय पीड़ा—ठट्ठा किया जाना, कोड़े खाया जाना और कीलों से जड़ा जाना—सहने के बाद भी उसका शरीर टूटा नहीं। यह एक गहरी आत्मिक सच्चाई को दर्शाता है कि यद्यपि कलीसिया दुःख सहती है, फिर भी मसीह का शरीर अखंड रहता है।

इफिसियों 5:30 (हिंदी पवित्र बाइबल):

“क्योंकि हम उसके शरीर के अंग हैं।”

यह शिक्षा मसीह के शरीर की एकता पर बल देती है। जैसे यीशु का शारीरिक शरीर सुरक्षित रखा गया, वैसे ही मसीह का आत्मिक शरीर—कलीसिया—एक बना रहना चाहिए। हर विश्वासी को, चाहे कैसी भी परीक्षाएँ आएँ, मसीह और एक-दूसरे से जुड़े रहना है।

भले ही विश्वासियों को कठिनाइयों से गुजरना पड़े, फिर भी हमें प्रेम में एक बने रहना है, जैसे मसीह का शरीर उसके दुःख में भी सम्पूर्ण रहा। पवित्र शास्त्र सिखाता है कि मसीह का शरीर नहीं टूटा, और न ही उसकी कलीसिया का शरीर विभाजन से टूटना चाहिए।

यूहन्ना 17:22 (हिंदी पवित्र बाइबल):

“जो महिमा तूने मुझे दी है, वह मैंने उन्हें दी है, ताकि वे
एक हों, जैसे हम एक हैं।”

यह वचन कलीसिया में एकता के महत्व को स्पष्ट करता है। यीशु ने स्वयं प्रार्थना की कि उसके अनुयायी एक हों, जैसे वह और पिता एक हैं। मसीह के शरीर में विभाजन इस दिव्य सिद्धांत के सीधे विरोध में है।

धार्मिक अंतर्दृष्टि:

विश्वासियों की एकता के लिए यीशु की प्रार्थना कलीसिया के जीवन का केंद्र है। फूट परमेश्वर के स्वभाव के विरुद्ध है, क्योंकि वह स्वयं त्रिएकता में पूर्ण एकता है। जब कलीसिया विभाजित होती है, तो संसार में मसीह की गवाही कमजोर पड़ जाती है।

शलोम।

कृपया इस शुभ समाचार को दूसरों के साथ भी साझा करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp